संस्थापित १८९७

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

वर्ष : १२४ ● अंक-०२ ● १४ जनवरी २०२० माघ कृष्ण पक्ष चतुर्थी संवत् २०७६ ● दयानन्दाब्द १९६ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२०

आर्य समाज की शक्ति है युवा पीढ़ी

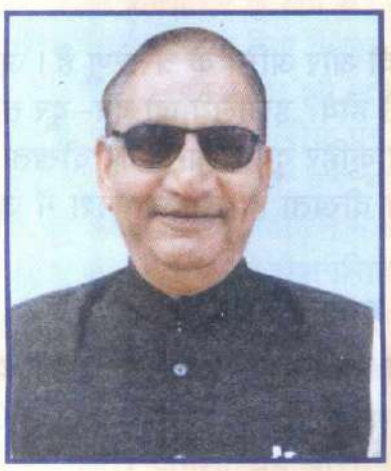

आर्य समाज की शक्ति है युवा पीढ़ी इसे आर्य समाज के कार्यक्रमों में प्रोत्साहित करना चाहिये। यह उद्‌बोधन सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी ने आर्य समाज सम्भल में व्यक्त किए जिन आर्य समाजों के साथ स्कूल, पाठशाला, कन्या–पाठशाला लगी हैं, और दुकान आदि से अच्छी आर्थिक आय है उसमें तो नए सदस्य का प्रवेश होना असम्भव जैसी बात है। नए सदस्य के आने पर उन समाजों के अधिकारियों को ऐसा लगता है जैसे उनके राज्य व जमींदारी पर आक्रमण हो रहा है। पूरी शक्ति लगाकर नवागंतुक को रोकने का प्रयास करते हैं। यदि कभी नए सदस्यों की भर्ती होती है तो उन्हीं अधिकारियों में से किसी के धन के बहाने उक्त समाज पर अधिकार जमाने के लिए ऐसे व्यक्तियों को लाया जाता है जिनकी आर्य समाज से दूर तक का भी सम्बन्ध नहीं होता है। वे अधिकारियों में से किसी की फैक्ट्री, दुकान आदि में कार्य करने वाले कर्मचारी मात्र होते हैं। दूसरा कारण आर्य समाज में नए रक्त के न आने का कारण यह है कि उनकी रुचि के अनुसार समाज में कार्यक्रम नहीं होता है। अपनी रुचि के विरुद्ध कार्यक्रम में तीन घण्टे तक लगातार उनके लिए बैठना कठिन है। इसके अतिरिक्त वृद्धों के मध्य गम्भीर वातावरण में अधिक बैठना नवयुवकों के स्वभाव व प्रकृति के भी विरुद्ध है। आर्य समाज के प्रति नवयुवक कैसे प्राप्त हो? इसका यही उत्तर कि मनोविज्ञान का यह साधारण सा नियम है कि जिस प्राणी को अपनी ओर आकर्षित करना है उसकी रुचि के अनुसार उसे सम्मुख कार्यक्रम रखा जाए। नवयुवकों की रूचि खेल–कूद तथा संघर्ष करने में होती है। बस इन्हीं के आधार पर अपने कार्यक्रम की रचना कर समाज को नवयुवकों के सम्मुख उपस्थित होना चाहिए। आर्य जगत् की शिरोमणि आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस तथ्य को सम्मुख रखकर सार्वदेशिक आर्यवीर दल की स्थापना की और सभी आर्य समाजों को अपने यहाँ इसकी शाखाओं की स्थापना करने का निर्देश दिया परन्तु अधिकांश आर्य समाजों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। जिन आर्य समाजों ने इसकी स्थापना की उनमें नवयुवक शक्ति विराजमान है और इसी कारण उनकी गतिविधियों में जीवन है।

आज आर्य वीर दल व आर्य कुमार सभा की स्थापना स्वतन्त्र रूप से हुई और उसमें भी छोटी आयु के कुमारों को आकर्षित करने के अनेक उपाय अपनाए गए, जिसके परिणामस्वरूप हजारों कुमार आर्य समाज की सम्पत्ति बन गए। आ ज आर्य वीरदल व आर्य कुमार सभा आर्य समाजों तथा आर्य सभाओं की उपेक्षा के कारण *अच्छी अवस्था में नहीं है, परन्तु फिर भी प्रतिवर्ष हजारों नवयुवक इनके द्वारा आर्य* समाज में प्रविष्ट होते हैं। नवयुवक भी ऐसे आते हैं जिनके परिवारों को आर्य समाज से कोई सम्बन्ध नहीं है। आर्य वीर दल की स्थापना के अतिरिक्त आर्य समाज के अधिकारियों का प्रयत्न करते रहना चाहिए और अपने साप्ताहिक सत्संगों को भी रूचिकर बनाना चाहिए। ताकि जनता आर्यसमाज की ओर अधिक से अधिक आकर्षित हो सके। आर्य समाज का प्रचार प्रसार बढ़े इसके लिए साप्ताहिक सत्संगों में अपने बालकों को अवश्य लाये और उन्हें आर्य समाज के सिद्धान्तों से अवगत करायें, समय–समय पर बालकों का वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी कराकर उनको प्रोत्साहित करते रहे। इस प्रकार बालकों में आर्य समाज के प्रति लगाव होगा मैं प्रदेश के सभी आर्य समाजों एवं पदाधिकारियों से अग्रह करता हूं कि वे साप्ताहिक सत्संगों का क्रम टूटने न दें और अधिक से अधिक परिवारों में भी इन सत्संगों करते कराते रहे। यदि ऐसा होता रहेगा तो निश्चित ही आर्य समाज का प्रचार प्रसार बढ़ेगा।

–डॉ. धीरज सिंह आर्य, सभा प्रधान

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य दिनेश शास्त्री जी रहे वेदपाठी ब्रह्मचारी वीरेन्द्र प्रताप सिंह, ऋषि कुमार टंकारा गुजरात रहे, भजनोपदेशक कुलदीप आर्य जी ने सुन्दर भजन प्रस्तुत किए, विशेष अतिथि माननीय ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य जी रहे इस अवसर पर आर्य समाज के सभी पदाधिकारी उपस्थित रहे।

यज्ञ से मेरी सब सम्पदाएँ सिद्ध हों

ज्यैष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे॰, मनन्युश्च मे भामश्च मे॰, अमश्च मेऽम्भश्च मे॰, जेमा च मेमहिमा च मे६, वरिमा च मे प्रथिमा च मे॰, वर्षिमा च मे द्राघिमा च मे॰, वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे॰, वर्षिमा च में द्राघिमा च मे॰, वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे॰, यज्ञेन कल्पन्ताम्॰।। यजु० १८.४

मैंने अपने सम्मुख आदर्श जीवन का एक चित्र कल्पित किया है। मैं चाहता हूँ कि मैं उसकी प्रतिमूर्ति बन जाऊँ। मेरे अन्दर ज्येष्ठता हो, आयु में बहुतों से छोटा होता हुआ भी मैं ज्ञानवृद्ध और गुणवृद्ध होने के कारण ज्येष्ठ कहलाऊँ। मुझे आधिपत्य प्राप्त हो। मैं अन्दर अपनी मनोवृत्तियों पर आधिपत्य करूं और बाहर समाज, संगठन, राष्ट्र आदि पर आधिपत्य करूँ, सत्कर्मों के अभियान में अनेकों को अपना अनुयायी बनाऊँ। मेरे अन्दर मन्यु हो। अन्याय, पाप, अत्याचार, दुष्टता आदि को न सहन करने की तैजस मनोवृत्ति मन्यु है। कहीं भी किसी बुराई को देखकर मेरा वह मन्यु जाग उठे ओर मैं उस बुराई के उन्मूलन में जुट जाऊँ। मरे अन्दर 'भाम हो' आत्मबल हो। मेरे अन्दर श्रम हो, शारीरिक बल हो। मेरे जीवन में 'अम्भः' हो, रस–मधुर्य हो। मुझे 'जेमा' अर्थात् विजय प्राप्त हो, मैं जीवन के आन्तरिक और बाह्य देवासुर–संग्रामों में विजयी बनूँ। मुझे 'महिमा' अर्थात् महान होने का गौरव प्राप्त हो। मुझे 'वरिमा' अर्थात् शरीर और हृदय दोनों की विशालता प्राप्त हो। मैं 'प्रथिमा' अर्थात् विस्तार को प्राप्त करूँ, मेरे गृह–क्षेत्र आदि का विस्तार हो, मेरे ज्ञान का विस्तार हो, मेरे धर्म का विस्तार हो, मेरे यश का विस्तार हो। मुझे 'वर्षिमा' अर्थात् वृद्धता प्राप्त हो, मैं सुखी वार्द्धक्य और शतायुष्य प्राप्त करूँ। मुझे 'वृद्ध' प्राप्त हो, मेरे पास संवृद्ध मात्रा में धन–धान्य, विद्या आदि निवास करें। मुझे सर्वतोमुखी 'वृद्धि' प्राप्त हो। प्रतिदिन यज्ञ करते हुए अग्नि की ऊर्ध्वमुख ज्वालाओं को देखता हुआ मैं इन प्रेरणाओं को ग्रहण करता हूँ। यज्ञ से मेरी समस्त सम्पत्तियाँ सिद्ध हों। मेरा ब्रह्मचर्य–यज्ञ, मेरा गृहस्थ–यज्ञ, मेरा वानप्रस्थ– यज्ञ, मेरा सन्यास–यज्ञ, और मेरा धर्मानुष्ठान–यज्ञ मुझे उक्त सम्पदाओं का अधिकारी बनायें।

सम्पादकीय.....

चेतना

"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और समाजिक उन्नति करना।" महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की नियमों में यह छठा नियम बनाया। समाजिक उन्नति मनुष्य का अन्तिम लक्ष्य है और उस लक्ष्य की पूर्ति के लिए व्यक्ति में चाहिए चेतना। समाज में होने वाली हलचल को देखकर समाज में होने वाली घटनाओं और उथल–पुथल पर हमें चुप नहीं बैठना चाहिए परन्तु आज हम कबूतर की तरह आंख बन्द कर बैठे हुए हैं। आज हमारी संस्कृति को कुचला जा रहा है बहूं बेटियों की आवरू के साथ खिलवाड़ हो रहा आर्य समाज की ओर से कोई भी दर्शन और प्रदर्शन का कार्य शिथिल होता चला जा रहा है आज सजगता की बहुत आवश्यकता है। संकल्प के साथ खड़े होने की आवश्यकता है।

पहले जब समाज में उथल–पुथल होती थी तो आर्य समाज खड़ा हो जाता था और सामाजिक समस्याओं पर अपने को बलिदान करना अपना दायित्व मानकर हर सम्भव कार्य करता था। देश के अन्दर चाहे स्वाधीता की लड़ाई हो, चाहे शिक्षा के प्रचार–प्रसार का अभियान, चाहे–अछूतोद्धार का कार्यक्रम रहा हो या भूकम्प व अतिवृष्टि या अनावृष्टि की समस्या रही हो चाहे अन्य आपदाओं से जूझने की बात हो आर्य समाज ने सीनातान ढाल का कार्य किया है और उचित दिशा देकर समस्याओं को दूर करने का काम किया है। परन्तु खेद है कि आज सारा देश बेढंगें समस्याओं से जूझ रहा है। सत्ता पक्ष एवं विपक्ष किम् कर्तव्य विमूढ़ होते जा रहे हैं विरोध प्रदर्शन का उपयुक्त तरीका प्रयोग विपक्ष नहीं कर रहा है। अपनी बात कहने का सबको अधिकार है किन्तु आगजनी और तोड़फोड़ करने का अधिकार किसी को नहीं है परमात्मा विपक्ष को सद्बुद्धि दे कि वे सहज और सहनशीलता का तरीका अपनायें बेलना विरोध में आज तो सत्य का रास्ता आसानी से मिल जायेगा।

सत्तापक्ष भी विपक्षी के बागियों को विरोधी विदेशी न मान कर उनको दण्डित करके नहीं अपितु समझा बुझा कर सही रास्ते पर लाने का काम करें। देश के अन्दर जन चेतना और सम्वेदना का स्तर ऊँचा होगा तभी देश समृद्ध होगा देश में समृद्धि भाईचारा के लिए संगठन सूक्त में कहीं गयी बातों पर ध्यान देगा उन पर दृढ़ हो कर चलने में देश मजबूत और देश के समाने खड़ी हुई चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होगा। सभी देशवासियों को एक स्वर से कहना पड़ेगा –

ओ३म् समानी व आकूतिः समाना हृदियानि वः।
समानमस्तु वो मनोः यथा वः सुहासति।।
हो सभी के दिल तथा संकल्प अ–विरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बेद् सुख सम्पदा।।

–सम्पादक

''यज्ञ से इन्द्रत्व''

नहीं द्वेष दिग्भ्रान्ति चाहिये। हमें यज्ञ कृति कान्ति चाहिये।
करो यज्ञ इन्द्रत्व बढ़ाओ। श्रेष्ठ कर्म कर स्वत्व बढ़ाओ।
चित्त भित्ति की कलुष कालिमा। उलट वृत्ति को पलट बनाओ।
चित्त भूमि में क्रान्ति चाहिये। हमें यज्ञ कृति कान्ति चाहिये।।१।।
देह क्रियायें रहें समुज्ज्वल। सन्तुलन हृदय में रहे प्रबल।
सद्भाव समन्वय के द्वारा। मस्तिष्क बनायें ध्येय धवल।
प्रेम श्रेय विश्रान्ति चाहिये। हमें या कृति काान्ति चाहिये।।२।।
रवि लोक हो रहा ज्योतिर्मय। नभ लोक हो रहा ऊर्जामय।
यह विमल ज्योति उत्तम ऊर्जा! भू कर्म बनायें शोभामय।
विश्व वृद्धि रत शान्ति चाहिये। हमें यज्ञ कृति कान्ति चाहिये।।३।।
यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् यद्भूमिं व्यवर्तयत्।
चक्राण ओपशं दिवि।।साम।।१२१।।

गतांक से आगे .....

उत्तरार्द्ध

अथैकादशसमुल्लासारम्भः

अथाऽऽर्य्यावर्त्तीयमतखण्डनमण्डने विधास्यामः

(नवीन) निराकार का भी आभास होता है जैसा कि दर्पण वा जलादि में आकाश का आभास पड़ता है। वह नीला वा किसी अन्य प्रकार गम्भीर गहरा दीखता है वैसा ब्रह्म का भी सब अन्तःकरणों में आभास पड़ता है।

(सिद्धान्ती) जब आकाश में रूप ही नहीं है तो उसको आंख से कोई भी नहीं देख सकता। जो पदार्थ दीखता ही नहीं वह दर्पण और जलादि में कैसे दीखेगा? गहरा वा छिदरा साकार वस्तु दीखता है, निराकार नहीं।

(नवीन) तो फिर जो यह ऊपर नीला सा दीखता है, वही आदर्श वा जल में भान होता है। वह क्या पदार्थ है?

(सिद्धान्ती) वह पृथिवी से उड़ कर जल, पृथिवी और अग्नि के त्रसरेणु हैं। जहाँ से वर्षा होती है वहां जल न हो तो वर्षा कहां से होवे? इसलिये जो दूर–दूर तम्बू के समान दीखता है वह जल का चक्र है। जैसे कुहिर दूर से घनाकार दीखता है और निकट से छिदिरा और डेरे के समान भी दीखता है वैसा आकाश में जल दीखता है।

(नवीन) क्या हमारे रज्जू, सर्प और स्वप्नादि के दृष्टान्त मिथ्या है?

(सिद्धान्ती) नहीं। तुम्हारी समझ मिथ्या है। सो हमने पूर्व लिख दिया। भला यह तो कहो कि प्रथम अज्ञान किस को होता है?

(नवीन) ब्रह्म को।

(सिद्धान्ती) ब्रह्म अल्पज्ञ है वा सर्वज्ञ।

(नवीन) न सर्वज्ञ, न अल्पज्ञ । क्योंकि सर्वज्ञता और अल्पज्ञता उपाधि सहित में होती है।

(सिद्धान्ती) उपाधि से सहित कौन है?

(नवीन) ब्रह्म।

(सिद्धान्ती) तो ब्रह्म ही सर्वज्ञ और अल्पज्ञ हुआ तो तुमने सर्वज्ञ और अल्पज्ञ का निषेध क्यों किया था? जो कहो कि उपाधि कल्पित अर्थात् मिथ्या है तो कल्पक अर्थात् कल्पना करने वाला कौन है?

(नवीन) जीव ब्रह्म है वा अन्य?

(सिद्धान्ती) अन्य है। क्योंकि जो ब्रह्मस्वरूप है तो जिसने मिथ्या कल्पना की वह ब्रह्म ही नहीं हो सकता। जिसकी कल्पना मिथ्या है वह सच्चा कब हो सकता है?

(नवीन) हम सत्य और असत्य को झूठ मानते हैं और वाणी से बोलना भी मिथ्या है।

(सिद्धान्ती) जब तुम झूठ कहने और मानने वाले हो तो झूठे क्यों नही?

(नवीन) रहो। झूठ और सच हमारे ही में कल्पित है और हम दोनों के साक्षी अधिष्ठान हैं।

(सिद्धान्ती) जब तुम सत्य और झूठ के आधार हुए तो साहूकार और चोर के सदृश तुम्हीं हुए। इससे तुम प्रामाणिक भी नहीं रहे। क्योंकि प्रामाणिक वह होता है जो सर्वदा सत्य माने, सत्य बोले, सत्य करे, झूठ न माने, झूठ करते हो तो तुम अनाप्त मिथ्यावादी हो।

(नवीन) अनादि माया जो कि ब्रह्म के आश्रय और ब्रह्म ही का आवरण करती है उसको मानते हो वा नहीं?

(सिद्धान्ती) नहीं मानते। क्योंकि तुम माया का अर्थ ऐसा करते हो कि जो वस्तु न हो और भासे है तो इस बात को वह मानेगा जिसके हृदय की आंख फूट गयी हो। क्योंकि जो वस्तु नहीं उसका भासमान होना सर्वथा असम्भव है। जैसा बन्ध्या के पुत्र का प्रतिबिम्ब कभी नहीं हो सकता। और यह 'सन्मुलाः सोम्येमाः प्रजाः' इत्यादि छान्दोग्य उपनिषत् के वचनों से विरूद्ध कहते हो?

(नवीन) क्या तुम वसिष्ठ, शंकराचार्य आदि और निश्चलदास पर्य्यन्त जो तुम से अधिक पण्डित हुए हैं उन्होंने लिखा है उसका खण्डन करते हो? हम को तो वसिष्ठ, शंकराचार्य और निश्चलदास आदि अधिक दीखते हैं।

(सिद्धान्ती) तुम विद्वान् हो वा अविद्वान्?

(नवीन) हम भी कुछ विद्वान् हैं।

क्रमशः

अमर हुतात्मा रोशन सिंह

□ प्रस्तुति- हरीश कुमार शास्त्री

भारत के स्वाधीनता संग्राम में फाँसी पाकर अपने वंश को अमर कर देने वाले अमर हुतात्मा रोशनसिंह का जन्म शाहजहाँपुर (उ.प्र.) के खेड़ा नवादा ग्राम में 22 जनवरी, 1892 को एक सामान्य कृषक परिवार में हुआ था। कहते हैं कि पूत के पाँव पालने में ही दिखायी दे जाते हैं। रोशनसिंह के साथ भी ऐसा ही हुआ। बचपन से ही वे अत्यधिक साहसी थे। भय का लेशमात्र भी उनके जीवन में दिखायी नहीं देता था।

बालपन में जिस काम को करने में उनके अन्य साथी हिचकते थे, रोशनसिंह आगे बढ़कर उसे अपने सबल कन्धों पर ले लेते थे। अपने इस गुण को विकसित करने के लिए वे खूब व्यायाम करते थे। इसलिए उनका शरीर भी अच्छा बलिष्ठ हो गया। वे साहसी तो थे हीय पर देशभक्ति की भावना भी उनमें कूट-कूट कर भरी थी। 1921 ई. में हुए असहयोग आन्दोलन में शाहजहाँपुर से जो लोग जेल गये, उनमें रोशनसिंह भी थे।

रोशनसिंह को दो साल की जेल हुई थी। इस दौरान बरेली जेल में उनका परिचय मवाना (जिला मेरठ, उ.प्र.) के क्रान्तिकारी विष्णुशरण जी से हुआ। क्रमशः यह परिचय घनिष्ठता में बदलता गया। उन्होंने रोशनसिंह को समझाया कि अंग्रेजों को भारत से सत्याग्रह द्वारा नहीं भगाया जा सकता। इसके लिए तो बम और गोली के धमाके करने होंगे।

विष्णु जी के माध्यम से उनका परिचय देश के अन्य क्रांतिवीरों से हुआ। इनमें पंडित रामप्रसाद 'बिस्मिल' प्रमुख थे। धीरे-धीरे उनका ध्यान गांधी जी की अहिंसा की बजाय बम-गोली और क्रान्तिकारियों की ओर हो गया। 1923 ई. में प्रख्यात क्रान्तिकारी शचीन्द्रनाथ सान्याल जब संगठन के विस्तार के लिए शाहजहाँपुर आये, तो वे रोशनसिंह से भी मिले। काकोरी कांड से पूर्व बमरौली कांड में रोशनसिंह की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

नौ अगस्त, 1925 को लखनऊ-सहारनपुर यात्री गाड़ी को लखनऊ के पास काकोरी में रोककर सरकारी खजाना लूट लिया गया। यह शासन के मुँह पर खुला तमाचा था। यद्यपि इसमें रोशनसिंह शामिल नहीं थेय पर युवावस्था से ही क्रान्तिकारी गतिविधियों में सक्रिय होने के कारण उनका नाम पुलिस की फाइलों में बहुचर्चित था। अतः शासन ने उन्हें भी पकड़ लिया।

काकोरी कांड के लिए पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ तथा राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी के साथ रोशनसिंह को भी फाँसी की सजा दी गयी। रोशनसिंह चूँकि इस कांड में शामिल नहीं थे, अतः उनके परिजनों तथा साथियों को विश्वास था कि उन्हें मृत्युदंड नहीं दिया जाएगा पर निष्ठुर शासन ने उन्हें भी फाँसी की सजा दी।

सजा मिलने पर रोशनसिंह का चेहरा खिल उठा। वे अपने साथियों की ओर देखकर हँसते हुए बोले, "क्यों, अकेले ही चले जाना चाहते थे ?" वहां उपस्थित सब लोगों की आँखें भीग गयीं पर वे अपनी मस्ती में मस्त रहे। रोशनसिंह ने जेल में भी अपनी दिनचर्या खंडित नहीं होने दी। वे प्रतिदिन स्नान, ध्यान और व्यायाम करते थे। 19 दिसम्बर, 1927 का दिन फाँसी के लिए निर्धारित था। उस दिन भी उन्होंने यह सब किया।

उनकी मानसिक दृढ़ता देखकर जेल अधिकारी हैरान थे। फाँसी के तख्ते पर चढ़कर उन्होंने प्रसन्न मन से वन्दे मातरम् का घोष तथा शान्ति मन्त्र का उच्चारण किया। इसके बाद उन्होंने फन्दा गले में डाल लिया। अगले ही क्षण उनकी आत्मा अनन्त आकाश में विलीन हो गयी।

आर्य (हिन्दी) भाषा एवं वर्ण लिपि भाषा

□ डॉ० विवेक आर्य, दिल्ली

शंका– आर्य (हिंदी) भाषा कि वर्ण एवं लिपि का आरम्भ कब हुआ?

समाधान– आर्य (हिंदी) भाषा की लिपि देवनागरी हैं। देवनागरी को देवनागरी इसलिए कहा गया हैं क्यूंकि यह देवों की भाषा हैं। भाषाएँ दो प्रकार की होती हैं। कल्पित और अपौरुषेय। कल्पित भाषा का आधार कल्पना के अतिरिक्त और कोई नहीं होता। ऐसी भाषा में वर्णरचना का आधार भी वैज्ञानिक के स्थान पर काल्पनिक होता हैं। अपौरुषेय भाषा का आधार नित्य अनादि वाणी होता हैं। उसमें समय समय पर परिवर्तन होते रहते हैं परन्तु वह अपना मूल आधार अनादि अपौरुषेय वाणी को कभी नहीं छोड़ती। ऐसी भाषा का आधार भी अनादि विज्ञान ही होता हैं।

वैदिक वर्णमाला में मुख्यतः १७ अक्षर हैं। इन १७ *अक्षरों में कितने अक्षर केवल प्रयत्नशील अर्थात* मुख और जिव्हा की इधर–उधर गति आकुंचन और प्रसारण से बोले जाते हैं और किसी विशेष स्थान से इनका कोई सम्बन्ध नहीं होता। उन्हें स्वर कहते हैं। जिनके उच्चारण में स्वर और व्यंजन दोनों की सहायता लेनी पड़ती हैं उन्हें व्यंजन कहते हैं। कितने ही अवांतर भेद हो जाने पर हमारी इस वर्णमाला के अक्षर ६४ हो जाते हैं। यजुर्वेद में इन्हीं १७ अक्षरों की नीचे के मंत्र द्वारा स्पष्ट गणना हैं– अग्निरेकाक्षरेण, अश्विनौ द्वयक्षरेण, विष्णुरू त्र्यक्षरेण, सोमश्चतुरक्षेण, पूषा पंचाक्षरेण, सविता षडक्षरेण, मरुतरू सप्ताक्षरेण, बृहस्पति अष्टाक्षरेण, मित्रो नवाक्षरेण, वरुणो दशाक्षरेण, इन्द्र एकादशाक्षरेण, विश्वदेवा द्वादशाक्षरेण, वसवस्त्रयोदशाक्षरेण, रुद्रश्चतुर्दशाक्षरेण, आदित्यारू पंचदशाक्षरेण, अदितिरू षोडशाक्षरेण, प्रजापतिरू सप्तदशाक्षरेण। (यजुर्वेद ६.३१.३४)

इस प्रकार यह मूलरूप से १७ अक्षरों की और विस्तार में १७ अक्षरों की वर्णमाला वैदिक होने से अनादि और अपौरुषेय हैं। वर्णमाला के १७ अक्षरों का मूल एक ही अकार हैं। यह अकार ही अपने स्थान और प्रयत्नों के भेद से अनेक प्रकार का हो जाता हैं। ओष्ठ बंद करके यदि अकार का उच्चारण किया जाए तो पकार हो जावेगा और यदि अकार का ही कंठ से उच्चारण करें तो ककार सुनाई देगा। इस प्रकार से सभी वर्णों के विषय में समझ लेना चाहिये। अकार प्रत्येक उच्चारण में उपस्थित रहता हैं, बिना उसकी सहायता के न कोई वर्ण भलीभांति बोला जा सकता हैं और न सुनाई देता हैं। इसलिए अकार के निम्न अनेक अर्थ हैं– सब, कुल, पूर्ण, व्यापक, अव्यय, एक और अखंड आदि अकार अक्षर के ही अर्थ हैं। इन अर्थों को देखकर अकार अक्षर व्यापक और अखंड प्रतीत होता हैं। क्यूंकि शेष अक्षर उसी में प्रविष्ट होने से इन्हीं के रूप में ही प्रतीत होते हैं। उपनिषद् में ब्राह्मण कम् और खम् दो अर्थ हैं। इसलिए इस अपौरुषेय वर्णमाला का उच्चारण करते समय हम एक प्रकार से ब्रह्मा की उपासना कर रहे होते हैं। वर्णों के शब्द बनते हैं और शब्दों का समुदाय भाषा हैं। इस प्रकार से हिंदी भाषा को ब्रह्मवादिनी भी कह सकते हैं।

इस प्रकार देवनागरी लिपि में प्रत्येक अक्षर का उच्चारण करते समय हम ब्रह्मा की उपासना कर रहे होते हैं। इसलिए देवनागरी हमारी संस्कृति का प्रतीक हैं। हमारी संस्कृति वैदिक हैं। वैदिक संस्कृति वेद द्वारा भगवान की देन हैं और वेदों के अनादि होने से हमारी संस्कृति और हमारी भाषा भी अनादि और अपौरुषेय हैं। एक और तथ्य यह हैं कि हमारी भाषा में सभी भाषाओँ के शब्द लिखे और पढ़े जा सकते हैं क्यूंकि इसके ६४अक्षर किसी भी शब्द की तथा उच्चारण की किसी भी न्यूनता को रहने नहीं देते।

देवनागरी लिपि के विकास की जहाँ तक बात हैं तो स्वामी दयानंद पूना प्रवचन के नौवें प्रवचन में लिखते हैं कि इक्ष्वाकु यह आर्यावर्त का प्रथम राजा हुआ। इक्ष्वाकु के समय अक्षर स्याही आदि से लिखने की लिपि का विकास किया। ऐसा प्रतीत होता हैं। इक्ष्वाकु के समय वेद को कंठस्थ करने की रीती कुछ कम होने लगी थी । जिस लिपि में वेद लिखे गए उसका नाम देवनागरी हैं। विद्वान अर्थात देव लोगों ने संकेत से अक्षर लिखना प्रारम्भ किया इसलिए भी इसका नाम देवनागरी हैं।

इस प्रकार से आर्य भाषा अपौरुषेय एवं वैदिक काल की भाषा हैं जिसकी लिपि का विकास भी वैदिक काल में हो गया था।

सन्दर्भ– उपदेश मंजरी– स्वामी दयानंद पूना प्रवचन एवं स्वामी आत्मानंद सरस्वती पत्र व्यवहार–२०६ (अप्रकाशित)

आर्य समाज क्या है?

□ पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय

आर्य समाज क्या है? आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ या अच्छा और समाज का अर्थ हुआ अच्छे व्यक्तियों की सभा।

'आर्य समाज' को महर्षि दयानन्द ने अप्रैल सन् १८७५ ई. अर्थात् चैत्र सुदी प्रतिपदा सम्वत् १९३२ विक्रमी को बम्बई में स्थापित किया था। इसके पश्चात् भारत वर्ष के प्रत्येक नगर और ग्राम में समाज खुल गये। इस समय संसार भर के समाजों की संख्या लगभग ८००० से भी अधिक है।

आर्य समाज के नियम

आर्य समाज के नियम इस प्रकार हैं–

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते है उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है।

३. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४. सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिए।

६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७. सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य बर्तना चाहिए।

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना चाहिए।

१०. सब मनुष्यों को समाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।

इन नियमों को देखने से निम्न बातों का पता चलता कि–

१. ईश्वर एक है।

२. वेद ईश्वर का ज्ञान है इसलिये आर्यों को वेद पाठ अवश्य करना चाहिए।

३. यदि कभी मालूम हो जाये कि जो बात हम मानते या करते हैं वह असत्य है तो उसको छोड़ देना चाहिए। कभी पक्षपात नहीं करना चाहिए।

४. समाज की भलाई के लिए हर एक को कोशिश करनी चाहिए।

आर्य समाज के सिद्धान्त ईश्वर विषयक

१. ईश्वर एह है अनेक नहीं।

२. ईश्वर निराकार है। उसको आँख से नहीं देख सकते और न ही उसकी मूर्ति बना सकते हैं।

३. ईश्वर सर्वज्ञ और सर्वव्यापक है। वह सब कुछ जानता है वह छोटी सी चीज के अन्दर और बाहर उपस्थित है।

४. ईश्वर सर्वशक्तिमान है। अर्थात् वह अपने किसी काम को करने के लिए आंख, कान, नाक आदि शरीर या अन्य किसी चीज या आदमी की बिना किसी सहायता से करता है। जीव और प्रकृति को अनादि मानने से ईश्वर पराश्रित या मुहताज नहीं होता। जीव और प्रकृति ईश्वर के उपकरण नहीं है। उपादान उपकरण नहीं होता।

५. ईश्वर अजन्मा और निर्विकार है। वह मनुष्य के समान जन्म–मरण में नहीं आता। अवतार भी नहीं लेता। राम, कृष्ण ईश्वर के अवतार नहीं थे, वे धर्मात्मा पुरूष थे, इसलिए उनके अच्छे कामों की याद करनी चाहिए और उनका अनुकरण करना चाहिए परन्तु उनकी मूर्तियों को ईश्वर समझकर नहीं पूजना चाहिए।

जीव विषयक

१. जीव चेतन है, जिनकी संख्या अनन्त है।

२. जीव न कभी मरता है न पैदा होता है। अर्थात् कभी ऐसा समय नहीं हुआ जब जीव न रहा हो और न ऐसा समय आयेगा जब जीवन नहीं रहेगा।

३. जीव में ज्ञान तो है पर थोड़ा और शक्ति भी थोड़ी है, इसलिए जीव को अल्पज्ञ कहते हैं।

४. जीव शरीर धारण करता है। कभी मनुष्य का कभी पशु का, कभी कीड़े आदि योनि का।

५. जीव जैसा कर्म करता है उसके फल अनुसार वैसा ही शरीर मिलता है। बुरे कर्म के लिए बुरी योनि और अच्छे कर्म के लिए अच्छी योनि मिलती है। इसी को जीव का अवतार कहते हैं। अवतार जीव का होता है, ईश्वर का नहीं।

६. जीव जब अच्छे कर्म करके सबसे ऊँची अवस्था को पहुँच जाता है तो उसे मोक्ष मिल जाता है अर्थात् शरीर नहीं रहता और स्वतंत्र विचरता हुआ ईश्वर के आनन्द में मग्न रहता है।

७. मोक्ष काल (मुक्ति की अवधि) ३१ नील १० खरब और ४० अरब वर्ष के लिए होता है। इसके पश्चात् जीव मोक्ष से वापिस लौटता है और सर्वप्रथम उत्तम ऋषियों का शरीर धारण करता है। इस शरीर में यदि अच्छे काम करता है तो फिर मुक्त हो जाता है और यदि बुरे कर्म करता है तो नीचे की योनियों का चक्र आरम्भ हो जाता है।

प्रकृति विषयक

१. प्रकृति छोटे–छोटे परमाणुओं का नाम है।

२. यह परमाणु जड़ है, इसमें ज्ञान नहीं।

३. यह परमाणु अनादि और अनन्त हैं अर्थात् न कभी उत्पन्न हुए न कभी नष्ट हुए।

४. ईश्वर इन्हीं परमाणुओं का जोड़कर सृष्टि बनाता है। आग, पानी और पृथ्वी यह इन्हीं परमाणुओं के संयोग का फल है। सूर्य, चाँद आदि इन्हीं से बने हैं। हमारे शरीर भी इन्हीं परमाणुओं से बने हैं।

५. जब परमाणु अलग–अलग हो जाते हैं तो उसको प्रलय या ब्रह्मरात्रि कहते हैं। जब सृष्टि बनी रहती है तो ब्रह्मदिन होता है।

वेद

१. वेद चार हैं–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

२. वेदों का ज्ञान ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों को दिया था। अर्थात्

अग्नि ऋषि को	–	ऋग्वेद
वायु ऋषि को	–	यजुर्वेद
आदित्य ऋषि को	–	सामवेद
अंगिरा ऋषि को	–	अथर्ववेद

३. इन ऋषियों ने वेदों का अन्य ऋषियों और मनुष्यों को उपदेश दिया। संसार भर की सब विद्याएं वेदों से ही निकलती हैं।

४. वेद स्वतः प्रमाण है परन्तु अन्य पुस्तकें परतः प्रमाण। अर्थात् जो बात उन सब पुस्तकों में वेद के अनुकूल है वह ठीक है जो वेद विरूद्ध हैं वह गलत।

५. वेद संस्कृत भाषा में नहीं है। अपितु देववाणी (प्राकृत भाषा) में हैं। संस्कृत भाषा वेदों की भाषा से निकली हैं और अन्य सब भाषायें संस्कृत से।

६. वेदों में इतिहास नहीं है। वेदों में यौगिक शब्द है, रूढ़ीं नहीं। अर्थात् वेदों में ऐसे शब्द आयें हैं जो हमको मनुष्यों के से नाम मालूम होते हैं, परन्तु उनके अर्थ मनुष्य नहीं हैं।

७. वेदों में राम, कृष्ण आदि अवतारों का वर्णन नहीं हैं।

८. वेदों में मुख्यतः तीन बातें हैं– ईश्वर के लिए भिन्न–भिन्न अवसरों के अनुकूल प्रार्थनायें, सृष्टि के नियम, मनुष्यों को उपदेश।

९. वेदों में इन्द्र, अग्नि, वरूण आदि शब्द कहीं–कहीं पर ईश्वर के लिए आये हैं और कहीं भौतिक पदार्थों जैसे आग पानी आदि के लिए। इसका पता संगति से लग सकता है।

१०. पहले संसार भर में वेद मत ही था। पीछे भिन्न–भिन्न मत पैदा हो गये।

अन्य शास्त्र

आर्य समाज वेदों को तो ईश्वरकृत मानता है, परन्तु इनके अतिरिक्त नीचे लिखे ऋषियों के ग्रंथ को भी उस हद तक

शेष पृष्ठ 5 पर

मानव देह साधना–स्थली है

□ साभार

यदि जीवन एक सत्य प्राप्ति की साधना के लिए है। इसके द्वारा समुचित साधना से लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए। परन्तु इस उत्तम देह को प्राप्त कर मनुष्य इस देह में ही रम जाता है और 'पश्येम शरदः शतं' के अनुसार अपने सब प्रयत्नों को स्थूल देह तथा भौतिक साधनों तक ही जब सीमित कर देता है तो वह लक्ष्य को भूल जाता है। इस पांच भौतिक स्थूल देह की दर्शन एवं जीवनीय शक्ति के आश्रय रूप जो सूक्ष्म एवं कारण शरीर हैं अथवा अन्नयमय कोश के अतिरिक्त जो हमारे प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय एवं आनन्दमय कोश हैं उनकी जो चैतन्य–दिव्य दर्शनशक्ति, श्रवणशक्ति तथा जीवनशक्तियाँ हैं उनको जागरित करने के लिए पाँच भौतिक शरीर प्राप्त हुआ है।

जिस चैतन्य–दिव्य शक्ति के दर्शन कर लेने के बाद अन्य कुछ भी दर्शन करने की आवश्यकता नहीं रहती, जिसके दिव्य शब्द के श्रवण कर लेने के बाद अन्य कुछ श्रवण करने की आवश्यकता नहीं रहती, जिस दिव्य–चैतन्य शक्ति के जान लेने के बाद अन्य कुछ जानने की आवश्यकता नहीं रहती, वही हमारा लक्ष्य है वह इस मानव–जीवन से ही प्राप्त होता है। इस शरीर में उसी के दर्शन कर लेने पर सब कुछ दिख जाता है, उसके शब्द को सुन लेने पर सब कुछ सुना जाता है और उसके जान लेने पर सब कुछ जान लिया जताा है। समस्त इन्द्रियों की शक्तियाँ वहाँ पूर्ण तृप्त हो जाती हैं। समस्त भोगों की इच्छा वहाँ जाकर उसी में निवास कर अन्य बाह्य भोगों की इच्छा से परावृत हो जाती है। उस समय जीव को अनुभव होता है कि अब मुझे कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रहा। जो प्राप्त करना था–प्राप्त हो गया।

जब तक यह स्थिति प्राप्त नहीं होती, तब तक मानव को मृगतृष्णा की भाँति अनन्त काल तक जीवन की दौड़–भाग में संलग्न रहना है और भटकना ही होगा। मनुष्य अपने जीवन में चाहे कितनी ही भौतिक उन्नति क्यों न कर ले फिर भी उसको बहुत कुछ प्राप्त करना शेष ही रह जाता और तृप्ति का अनुभव नहीं हो पाता।

ब्रह्माण्ड में ज्ञान की विद्यमानता :

अलब्ध की लब्धि के लिए मानव को अपने ज्ञान एवं प्रयत्नों का विकास करना पड़ता है। यद्यपि मानव में ज्ञान एवं प्रयत्नों का उद्‌गम एवं विकास उसकी चिन्तन–शक्ति से शुद्ध बुद्धि के साहचर्य से होता है तथापि जो कुछ भी ज्ञान वह प्राप्त करता है उसका पूर्व अस्तित्व इस ब्रह्माण्ड में विद्यमान रहता है। उदाहरणार्थ अग्नि, जल, विद्युत, अणु आदि के बारे में जो भी और जितना भी ज्ञान हम उपलब्ध करते हैं उस ज्ञान को प्रकट करने की योग्यता का अस्तित्व उन पदार्थों में विद्यमान रहता है तभी उसका तत्त्वज्ञान प्राप्त करके हम उसका उपयोग भी लेते हैं। अतः जो हमारे लिए अज्ञात तत्त्व है उसका ज्ञान भी पूर्व से विद्यमान है। अग्नि, जल, विद्युत् सूर्य आदि को हम देखते हैं। परन्तु सब मनुष्यों में ज्ञान की उपलब्धि समान नहीं होती। ब्राह्य रूप से तत्तत् ज्ञान के विद्यमान होते हुए भी हम उसे ग्राहण नहीं कर पाते और क्रमशः कुछ ज्ञान आंशिक रूप से प्राप्त कर पाते हैं। अतः यह विश्व हमारे ज्ञान विज्ञान एवं प्रायत्नों का सदा पथप्रदर्शक रहेगा। हम चाहे कितना ही ज्ञान क्यों न प्राप्त कर लें हमें इसकी और आशा से देखना होगा और इसी के द्वारा महान् आन्तरिक ज्ञान दोहन होगा।

वेद का प्रत्यक्ष रूप से दर्शन यही विश्व है। इसके आन्तरिक ज्ञान का भी प्रत्यक्ष रूप से दर्शन इसी मानव के शरीररूपी विश्व में हो सकता है। "सैषा त्रयी विद्या तपति" का रहस्य यही है कि इस प्रत्यक्ष वेद का दर्शन करो। इसके ज्ञान–विज्ञान का अध्ययन–मनन, चिन्तनादिपूर्वक करो। ज्ञान का यह अथाह सागर है इससे अपनी शक्ति एवं परिधि के अनुसार अपनी ज्ञान की झोली भर लो, फिर भी उस कोष में तो असंख्य मणिमुक्ता ऋषिगत प्राप्त करते चले आ रहे हैं।

आर्य समाज...

पृष्ठ 4 का शेष

प्रामाणित मानता है जिस हद तक वह वेदों के अनुकूल हों, जैसे–

१. चार ब्राह्मण ग्रंथ – ऐतरेय, साम, शतपथ और गोपथ।

२. ग्यारह उपनिषद– ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैतरीय, छान्दोग्य, वृहदारण्यक और श्वेताश्वेतर।

३. छः दर्शन–गौतम ऋषि का न्याय, कणाद ऋषि का वैशेषिक, कपिल ऋषि का सांख्य, पतंजलि ऋषि का योग, जैमिनी, ऋषि का पूर्व मीमांसा और व्यास ऋषि का उत्तर मीमांसा या मनुस्मृति।

५. मानव धर्मशास्त्र या मनुस्मृति।

५. गोभिल गृह्यसूत्र, पारस्कर गृह्यसूत्र, आश्वलायन गृह्यसूत्र।

६. स्वामी दयानन्द के ग्रंथ– सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि आदि–आदि।

मनुष्य समाज

१. पहले पहल मनुष्य तिब्बत में (बिना मैथुन के) उत्पन्न हुए वहां से सब जगह फैल गये। आर्य जाति से पहले और कोई जाति नहीं थी। आर्य जाति के ही भिन्न–भिन्न देशों में भिन्न–भिन्न नाम हो गये हैं।

२. पहले पहल एक आदमी और एक और नहीं वरन् बहुत से युवा पुरूष और बहुत सी युवतियां अमैथुन रूप में पैदा हुई थी। फिर इन्हीं की संतान आपस में विवाह करके मैथुनी सृष्टि द्वारा आगे बढ़ती गई।

३. सब मनुष्य जन्म से समान है। गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार उनके ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र नाम होते हैं।

४. पढ़ने पढ़ाने वाले विद्वान व्यक्तियों का नाम ब्राह्मण है, शरीर रक्षा करने वालों का क्षत्रिय, व्यापार और कला कौशल का वैश्य। जो सेवा करते हैं वह शूद्र हैं। गुण कर्म और स्वभावानुसार वर्ण बदल जाता है अर्थात् शूद्र ब्राह्मण हो सकता है और ब्राह्मण शूद्र बन जाता है।

५. शूद्र का कार्य नीच वर्ग का नहीं है और न ही उससे किसी को घृणा ही करनी चाहिए।

६. वेद पढ़ने का अधिकार सबको है अर्थात् सभी वर्ग के व्यक्तियों को हैं।

यज्ञ

पांच यज्ञ हर आर्य को प्रतिदिन करने चाहिए–

१. ब्रह्म यज्ञ– अर्थात् ईश्वर की पूजा और वेद पाठ।

२. देव यज्ञ– अर्थात् हवन।

३. बलिवश्य यज्ञ– अर्थात् चींटी, गाय, कुत्ता आदि आश्रित जीवों को भोजन देना।

४. पितृ यज्ञ– अर्थात् जीवित माता पिता का सत्कार। मरे हुए माता पिता का सत्कार करना असम्भव है। इसलिये मृतकों का श्राद्ध, तर्पण आदि नहीं करना चाहिए।

५. अतिथि यज्ञ – अर्थात् विद्वान साधु, सन्यासी अथवा वेदोपदेशक आदि घर पर आयें तो उनका आदर सत्कार करना।

संस्कार

जीवन में प्रत्येक आर्य के सोलह संस्कार होने चाहिए–

तीन जन्म से पहले– १. गर्भाधान, २. पुंसवन, ३. सीमन्तोन्नयन।

छः बचपन में–

१. जात कर्म, २. नामकरण, ३. निष्क्रमण, ४. अन्नप्राशन, ५. मुण्डन ६. कर्णवेध।

दो विद्या आरम्भ करने के समय– १. यज्ञोपवीत २. वेदारम्भ।

दो विद्या समाप्त करने पर– १. समावर्तन, २. विवाह।

तीन पिछली अवस्था में– १. वानप्रस्थ, २. सन्यास, ३. अन्त्येष्टि

विवाह

१. विवाह कम से कम लड़की का सोलह वर्ष की अवस्था में और लड़कों का पच्चीस वर्ष की अवस्था में करना चाहिए।

२. एक पुरूष एक ही स्त्री के साथ विवाह कर सकता है।

३. अक्षतयोनि विधवा का अक्षतवीर्य पुरूष के साथ विवाह करना ठीक है।

४. यदि आवश्कता हों तो अक्षतयोनि विधवा का अक्षतवीर्य के साथ विवाह हो सकता है।

ओ३म्

श्रीमद्दयानन्दाब्द—195 कृण्वन्तो विश्वमार्यम् फोन नं0—0522—2286328

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ

का

136वाँ, वार्षिक बृहद् अधिवेशन

दिनांक—१४, १५ मार्च, २०२० तदनुसार दिन शनिवार एवं रविवार

(तिथि—चैत्र कृष्ण षष्ठी एवं सप्तमीं) सम्वत्—२०७६)

अधिवेशन स्थल- सभा भवन प्रांगण-5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

समस्त पदाधिकारी / अन्तरंग सदस्य / प्रतिनिधि / आर्य बन्धुओं / बहिनों,

निवेदन के साथ सूचित करना है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ का दो—दिवसीय अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन एवं वार्षिक अधिवेशन (साधारण सभा) आगामी दिनांक १४, १५ मार्च, २०२० तदनुसार दिन शनिवार एवं रविवार को सभा प्रांगण में प्रातः ०८.०० बजे से सायं ०६.०० बजे तक संस्था प्रधान—डॉ० धीरज सिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा, जिसमें पूरे प्रदेश की आर्य समाजों / जिला सभाओं / शैक्षणिक संस्थानों एवं गुरूकुलों आदि के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

सभा द्वारा आर्य समाजों और जिला सभाओं को प्रतिनिधि चित्र डाक से भेजे जा चुके हैं। आप अपनी आर्य समाजों एवं जिला सभाओं का विवरण चित्र में भरकर समस्त स्रोतों से आय का दशांश, सूदकोटि, वेद प्रचार फण्ड, प्रतिनिधि शुल्क एवं आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क आदि जमा कर रसीद अवश्य प्राप्त कर लें। विशेष परिस्थिति में प्रधान जी की अनुमति से ये चित्र एवं वांछित दशांश आदि के साथ प्रतिनिधि चित्र अधिवेशन से पूर्व अथवा अधिवेशन के समय जमा किये जा सकेंगे। जमा करने वाले धनराशि का आकलन निम्न प्रकार से होगाः—

(क) आर्य समाज के सभासद / सदस्यों का रू० ५/— प्रतिमाह प्रति सदस्य के हिंसाब से एक वर्ष के कुल चन्दे का दशांश।
(ख) आर्य समाज की परिसम्पत्तियों से यथाः— दुकानों / भवनों / अतिथि गृहों / विद्यालयों का किराया, दान से प्राप्त धनराशि, से प्राप्त आय आदि का पूरे वर्ष में प्राप्त कुल धन का दशांश।
(ग) सूदकोटि के रूप में रू० २५/—
(घ) वेद प्रचार फण्ड के रूप में प्रति सदस्य / सभासद रू० २/— वार्षिक
(च) प्रतिनिधि शुल्क के रूप में प्रत्येक प्रतिनिधि रू० २५/— इसमें किसी भी समाज के पहले ११ सदस्य पर १, ३१ सदस्य पर २ एवं प्रत्येक अगले २० सदस्य पूर्ण होने पर अतिरिक्त प्रतिनिधि बन सकेंगे।
(छ) आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क रू० १००/— अथवा आजीवन शुल्क के रूप में १०००/— के हिसाब से।
(ज) जिला आर्य प्रतिनिधि सभाएं रू० १००/— दशाश एक मुश्त तथा रू० १००/— आर्य मित्र शुल्क एवं प्रतिनिधि शुल्क प्रति प्रतिनिधि रू० २५/— भी सभा में जमा करके रसीद प्राप्त कर लें।
(झ) प्रत्येक जिला सभा न्यूनतम ११ समाजों का प्रतिनिधित्व करने पर ही संगठित मानी जायेंगी।

इस प्रकार उपर्युक्त समस्त मदों को जोड़कर जो भी धन बनता हो, उसे चित्र के साथ भरकर सभा में दिनांक—१५ फरवरी, २०२० तक अवश्य जमा करा दें। यह धनराशि मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा नकद धनराशि के रूप में सभा में चित्र के साथ जमा की जा सकती हैं। मनीआर्डर, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ के नाम भेजें। बैंक ड्राफ्ट, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ के नाम से भेजें। जमा धन की रसीद सभा से अवश्य ही प्राप्त कर लें। जिन समाजों को वाषिक चित्र प्राप्त न हो, वे समाजें सभा के उपरोक्त फोन नम्बर पर सम्पर्क कर सकते हैं।

सभा प्रांगण में तथा कुछ अन्य स्थानों पर सभी आगन्तुक / प्रतिनिधियों के ठहरने एवं भोजन व्यवस्था सभा भवन प्रांगण में ही की गई है। कृपया रास्ते के लिए ऋतु अनुकूल वस्त्रों को साथ रखें।

इस द्विदिवसीय अधिवेशन का संक्षिप्त कार्यकम निम्न प्रकार हैः—

दिनांक 14-03-2020 दिन शनिवार

प्रथम सत्र

प्रातःकाल ८.०० बजे	—	राष्ट्रभृत यज्ञ (सभा की भव्य यज्ञशाला में) भजन एवं प्रवचन।
प्रातःकाल १०.०० बजे	—	ध्वजारोहण— माननीय सभा प्रधान जी द्वारा।
प्रातःकाल ११.०० बजे	—	प्रदेशीय अन्तरंग सभा की बैठक।
१ बजे से भोजनावकाश		

द्वितीय सत्र

अपराह्न ०२.०० बजे से	—	आर्य महासम्मेलन प्रारम्भ।
सायंकाल ६.०० बजे	—	सामूहिक संध्या।
रात्रिकाल ७.०० से ६.००	—	सामाजिक कुरीतियॉ, भ्रष्टाचार निवारण सम्मेल(मद्यनिषेध / नशाबंदी / दहेज उन्मूलन आदि विषयों पर)
रात्रि ६.०० बजे	—	शान्ति पाठ के उपरान्त प्रथम दिन का सम्मेलन समाप्त।

द्वितीय दिवस दिनांक 15-03-2020 (रविवार)

तृतीय सत्र

प्रातःकाल ८.०० से ६.०० बजे तक	—	राष्ट्रभृत यज्ञ, भजन एवं उपदेश आदि।
पूर्वाह्न ११.०० बजे से	—	साधारण सभा की बैठक प्रारम्भ।
,,	—	माननीय सभा प्रधान एवं सभा मन्त्री का प्रतिनिधियों को सम्बोधन।
,,	—	वार्षिक वृत्तांत एवं आय—व्यय का लेखा प्रस्तुत।
,,	—	अनुमानित आय—व्यय का लेखा स्वीकारार्थ प्रस्तुत तथा अन्य आवश्यक विषय।
दोपहर १.०० बजे	—	भोजन अवकाश

चतुर्थ सत्र

प्रातःकाल ०१.०० बजे से	—	राष्ट्र रक्षा सम्मेलन
अपराह्न २.०० बजे से	—	आर्य समाज संगठन, महिला उत्थान एवं युवा चरित्र निर्माण सम्मेलन।
सायं ४.०० बजे	—	धन्यवाद, शान्ति पाठ तथा अधिवेशन के समापन की घोषणा।

(डॉ0 धीरज सिंह आर्य)
प्रधान

(अरविन्द कुमार)
कोषाध्यक्ष

(ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य)
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ

स्वामी श्रद्धानन्द का 93वाँ बलिदान दिवस समारोह

स्वामी श्रद्धानन्द ने शिक्षा का प्रारूप दिया

''२०वीं शताब्दी में स्वामी श्रद्धानन्द एकमात्र पले व्यक्ति थे जिनहोंने विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा हिन्दुओं के जबरन धर्मान्तरण पर सवाल उठाया व साहसिक कदम उठाते हुये उनकी घर वापसी के लिए शुद्धि आन्दोलन का सूत्रपात्र किया'' उक्त विचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के पुस्तकाध्यक्ष डॉ० जय प्रकाश भारती ने काशी आर्य समाज में आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान के ६३ बलिदान दिवस के अवसर पर संगोष्ठी में बतौर मुख अतिथि व्यक्त किये।

स्वामी श्रद्धानन्द का शुद्धि आन्दोलन, संस्कृति और राष्ट्रीय शिक्षा ''विषयक संगोष्ठी का विषय स्थापन आर्य समाज के मंत्री प्रकाश नारायण शास्त्री ने किया।

विशिष्ट वक्ता पूर्वसभासद लीलाराम सचदेवा ने कहा कि श्रद्धानन्द ने पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के विरूद्ध राष्ट्र, संस्कृति और संस्कारों की रक्षा के लिये शिक्षा का राष्ट्रीय प्रारूप दिया। काशी आर्य विद्वत परिषद के अध्यक्ष पं० ज्ञान प्रकाश आर्य ने बतलाया कि स्वामी श्रद्धानन्द ने दिल्ली की जामा मस्जिद की वेदी से देश के मुसलमानों को राष्ट्र की मुख्य धारा से जुड़ने का आहवान किया था।

काशी आर्य समाज के प्रधान श्री नाथ सिंह पटेल ने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द ने आजीवन दलितोत्थान तथा नारी सशक्तितकरण के लिये कार्यकर सोशल इन्जीनियरिंग को नई दिशा दी।

कार्यक्रम का प्रारम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ श्री रमेश जी आर्य एवं पं० ज्ञान प्रकाश, प्रेमचन्द्र आर्य ने यज्ञ का संयोजन किया रमेश जी आर्य, विभाआर्य, हेमा आर्य ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किया। संगोष्ठी की संचालन प्रकाश नारायण शास्त्री ने तथा धन्यवाद प्रकाश ओम प्रकाश आर्य, शान्ति पाठ श्री बृजभूषण सिंह ने कराया। —प्रकाश नारायण शास्त्री

आर्य पुरोहित सभा मुम्बई का 16वां वार्षिकोत्सव

हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

दिनांक ५.०१.२०२० को आर्य समाज सान्ताक्रूज मुम्बई में १ दिवसीय समारोह आर्य पुरोहित सभा मुम्बई द्वारा मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा संजय याज्ञिक मेरठ अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा आर्य समाज के प्रचार प्रसार में आर्य समाज के पुरोहितों का महत्वपूर्ण योगदान है क्योंकि पुरोहित ही प्रत्येक व्यक्ति से सम्पर्क में रहता है। आज आर्य समाज के प्रचार में कमी आ रही है पुरोहितों को पुनः इस कमी को दूर करना होगा यह इनका नैतिक कर्तव्य है अपने आशीर्वचन में लखनऊ से पधारे हुए योगनान्द सरस्वती ने कहा मैं धन्यवाद देता हूं आर्य समाज सान्ताक्रूज के अधिकारियों को जिन्होंने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग दिया।

इस अवसर पर आर्य पुरोहित सभा के प्रधान नामदेव आर्य, नरेन्द्र शास्त्री महामंत्री, कोषाध्यक्ष भोजकुमार शास्त्री, व आर्य समाज सान्ताक्रूज के प्रधान दीपक पटेल, महामंत्री रमेश सिंह परामर्श दाता सोमदेव शास्त्री व आचार्य मिथिलेश, आचार्य राजकुमार पंडित वेदमित्र, पं० भूपेन्द्र शास्त्री, पं० कैलाश शास्त्री, आदि महानुभाव का सहयोग रहा।

निर्वाचन

आर्य समाज टाउनहाल रोड़ शाहजहाँपुर

प्रधान– श्री कृष्ण कुमार सक्सेना

मंत्री– श्री भुवनेश कुमार आर्य

कोषाध्यक्ष– श्री वेदपाल सिंह

आर्य समाज तिलहर

प्रधान– श्री ओम प्रकाश आर्य

मंत्री– श्री शिवराम सिंह आर्य

कोषाध्यक्ष– श्री विजय पाल सिंह आर्य

आर्य समाज टनकपुर चम्पावत उत्तराखण्ड

का वेदप्रचार महोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज टनकपुर का वार्षिक उत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रामदेव जी ने यज्ञोपवीत के वैज्ञानिक महत्व को अत्यंत सुन्दर ढंग से बताते हुए कहा तीन यज्ञोपवीत के तीन ऋण हमारे ऊपर हैं देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण हमें इसके महत्व को समझना चाहिए। बहराइच से आई भजनोपदेशिक गीतादेवी ने सुन्दर भजन प्रस्तुत किए एवं प्रभातकुमार शास्त्री ने भी सुन्दर भजन प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के समापन पर प्रधान राजीव आर्य ने सभी महानुभाव का धन्यवाद व आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में विमल आर्य, गायत्री आर्य, सामश्रवा आर्य, वृजश्रवा आर्य, अग्निवेश, श्यामदेव, ऋषिदेव, श्यामसिंह, ख्यालीराम जोशी, शिवकुमार, अनिल चौधरी, खेमसिंह, नीमा महेश्वरी, लल्जावती, सुशीला, रश्मि, मेधा आदि महानुभाव उपस्थित रहे।

शोक संदेश

बड़े ही दुःख के साथ यह सूचना दे रहा हूँ कि आर्य समाज वजीरगंज, गोण्डा के संरक्षक एवं बाबू लाल आर्य के पौत्र मोहित का देहान्त दिनांक १५.१२.२०१६ को हो गया था स्वयं बाबू लाल जी पूरा परिवार आर्य समाज के लिए समय–समय पर अपनी पूर्ण भूमिका अदा कर रहा है इनके निधन से पूरा आर्य समाज परिवार शोकाकुल है यह आर्य समाज की अपूर्णीय छति है जो पूरा होना असम्भव है। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे और शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करे।

गृह विवाह ज्योति 21 जनवरी 2020

सम्भल में यजुर्वेद महापरायण यज्ञ सम्पन्न

सम्भल नगर के प्रतिष्ठित समाज सेवी एवं ज्वैलर्स प्रदीप वर्मा के सौजन्य से तीन दिवसीय यजुर्वेद पारायण यज्ञ के समापन सत्र में भारी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित हुए। मुख्य अतिथि के रूप में मा. डा. धीरज सिंह जी आर्य (प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र.), विशेष अतिथि मा. ज्ञानेन्द्र आर्य गांधी जी (उप-प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र.), श्री परमेश्वर लाल सैनी (एम.एल.सी. सम्भल), श्री अखिलेश अग्रवाल (चेयरमैन नगरपालिका गवां जिला सम्भल उ.प्र.) उपस्थित रहे। वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ श्रद्धालुओं ने यजुर्वेद पारायण महायज्ञ में पूर्ण आहुति प्रदान की। इसके उपरान्त सामूहिक भोज में प्रसाद ग्रहण किया। नगर के मौहल्ला ठेर में महायज्ञ कार्यक्रम में पूर्ण आहुति से पूर्व आचार्य विरेन्द्र शास्त्री ने आध्यात्मिक चर्चा में कहा कि ईश्वर ने वेदों का ज्ञान प्राणियों के कल्याण के लिए दिया है। वेद में सब विद्याएं पूर्ण रूप से विद्यमान है। यज्ञ की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि यज्ञ की अग्नि से उत्पन्न होने वाली वायु प्रकृति एवं मनुष्य के मन को शुद्ध करती हैं। ब्रह्मचारी देवेन्द्र प्रताप एवं ऋषि कुमार ने वेद पाठ किया। यज्ञ के समापन दिवस के मुख्य अतिथि डा. धीरज सिंह आर्य ने आर्य समाज के सिद्धांतों एवं यज्ञ की महिमा पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर दीपक वर्मा, प्रवीण वर्मा, मनिन्दर सोनी, भा.ज.पा. के पूर्व सांसद सत्यपाल सैनी, अमरीष आर्य, नरेन्द्र मिश्रा, डा. अभय सोनी, डा. लव कुमार, सारिका वर्मा, नम्रता वर्मा, रुचि सोनी, आभा, प्रदीप कुमार वर्मा, अवनीश रस्तोगी, जयगोपाल शास्त्री आदि शामिल रहे।

शंका विनाश का कारण है, शंका करने से बने बनाये काम बिगड़ते हैं।

ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज, स्टेशन रोड, पीलीभीत ,

सोमवार १७ फरवरी २०२० से शुक्रवार २१ फरवरी २०२० तक

आमंत्रित विद्वान

आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी (वैदिक प्रवक्ता), सहारनपुर

श्री भीष्म आर्य जी (भजनोपदेशक), बिजनौर

—: निवेदक :—

हरी बहादुर आर्य	माखन लाल आर्य	वासुदेव गंगवार
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मंत्री

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ओ३म् वेदोऽखिलोधर्ममूलम्

स्वामी दयानन्द आनन्दबाग वैरिटेबुल ट्रस्ट, सुकृत

एवं आर्य समाज, ग्राम व पोस्ट-सुकृत, सोनभद्र के संयुक्त तत्वावधान में

वैदिक धर्म एवं चतुर्वेद शतक यज्ञ-महोत्सव

यज्ञ प्रवचन भजन

आमंत्रण पत्र

।। ऋग्वेद ।। ।। यजुर्वेद ।। ।। सामवेद ।। ।। अथर्ववेद ।।

तिथि– फाल्गुन कृष्ण 13 एवं 14 सं० 2076 तदनुसार दि. : 21 एवं 22 फरवरी (शुक्र, शनि) 2020 ई०

समय : प्रातः 8:30 से 12 बजे तक तथा अप० 2 बजे से 9 बजे तक

कार्यक्रम स्थल – आनन्दबाग-सुकृत (काशी पेट्रोल पम्प के पीछे) सोनभद्र

योग शिविर – सुबह 5:15 से 7:00 बजे तक प्रतिदिन

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com ई-मेल आर्य मित्र aryamitrasaptahik@gmail.com

सेव

आर्य समाज सभल के कार्यक्रम से लिया गया छायाचित्र

आर्य समाज शाहजहांपुर साप्ताहिक यज्ञ एवं निर्वाचन

आर्य सामज टनकपुर चम्पावत के वार्षिकोत्सव से लिया गया छायाचित्र

आर्य पुरोहित सभा मुम्बई के 16वें वार्षिकोत्सव से लिया गया छायाचित्र

अथर्ववेद परायण यज्ञ
ऋग्वेद परायण महायज्ञ

०५ जनवरी २०२० से १४ जनवरी २०२० तक

स्थान : आर्य बन्धु पब्लिक स्कूल, सादतनगर, इकला, डासना गाजियाबाद।

यज्ञ के ब्रह्मा

स्वामी चन्द्रवेश सन्यास आश्रम गाजियाबाद
व स्वामी अखिलानन्द सरस्वती पूठ
वेदपाठी : गुरूकुल पूठ महाविद्यालय हापुड़

भजनोपदेशक

श्री कुलदीप विद्यार्थी

निवेदक :

ज्ञानेद्र सिंह आर्य मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

उपप्रबन्धक :

ओमेन्द्र कुमार आर्य,
आर्य बन्धु बालिका इण्टर कालेज
सादत नगर इकला, डासना गांवाद

समस्त आर्य समाजों/जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं को आवश्यक सूचना एवं निर्देश

संस्था प्रधान जी के निर्देशानुसार आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र, नारायण स्वामी भवन, ५–मीराबाई मार्ग लखनऊ से सम्बद्ध उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड में कार्यरत आर्य समाजों एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान/मन्त्री/ कोषाध्यक्ष को सूचित किया जाता है, कि संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रदेश में कार्यरत् सभी आर्य समाजों एवं जिला सभाओं को बावत वर्ष–२०२० एवं वित्तीय वर्ष–२०१८–१६ हेतु वार्षिक चित्र प्रेषित किये जा रहे हैं। सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों से अपेक्षा है, कि वे अपनी–अपनी आर्य समाजों का वार्षिक विवरण भरकर संस्था कार्यालय में दिनांक १५ फरवरी २०२० तक वार्षिक चित्र (वार्षिक विवरण) एवं दशांश जमा करके रसीद प्राप्त कर लें तथा निम्न अभिलेख सभा कार्यालय में उपलब्ध करा दें।

स्वामी– आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप से शारदा प्रिंटिग प्रेस, माडल हाउस लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक/मुद्रक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।